

gend: पूर्वः पूर्वी यज्ञमानो वनीयान् RV. 5, 77, 2. वर्दन्ब्रह्मावदतो वनीयान् 10, 117, 7. — 2) am meisten mittheilend, — gebend BHĀG. P. 1, 19, 36. वनयिता याचयिता वनयितृमो वनीयान् अत्युदारतया याचेया इति प्रवर्तकः Comm. — Vgl. वनिष्ठ.

वनीयक m. Bettler, Bittsteller UśĀVAL. zu UṆĀDIS. 4, 189. AK. 3, 1, 49. H. 387. HĀR. 38. HALĀJ. 2, 104, v. 1.

वनीवन् (vom intens. von 1. वन् adj. heischend: वनीवानो मम हूतासु इन्द्रं स्तोमोश्चरति RV. 10, 47, 7.

वनीवृत्तन (vom intens. von वक्त्र) n. das Hinundherführen ÇĀT. BR. 10, 1, 5, 2. KĪTĪ. ÇĀ. 16, 6, 22. 25.

वनु (von 1. वन् nom. ag. 1) Nachsteller: वनिन्द्र वनूक्तु RV. 4, 30, 5. — 2) fraglich ob Anhänger, Ergiebener: वनं वा पे सुश्रुषीं सुश्रुतो धुः RV. 10, 74, 1.

वनुष्प (von वनुस्), ऽप्यति das Abschen haben auf, nachstellen, angreifen; = क्रुध्यति NAIGB. 2, 12. = कृति Nir. 5, 2. RV. 1, 132, 1. इन्धानो अग्निं वनवद्वनुषतः 2, 23, 1. 26, 1. 7, 1, 15. 4, 9. दीर्घप्रयज्यमति यो वनुष्पति 7, 82, 1. 8, 40, 7. स्पृधो वनुष्पन्वनुषो नि जूर्व 6, 6, 6. यो हूणाशो वनुष्पता 9, 63, 11. med. verlangen, erlangen: र्मेो वनुष्पते मती 7, 6.

1. वनुस् (von 1. वन् adj. 1) verlangend, eifrig: anhänglich, liehend: प्र प्रेतै अग्ने वनुषः स्याम RV. 1, 150, 3. अमृतस्य योगे वनुषः 3, 27, 11. कृतस्य वनुषे पूर्यायं 4, 44, 3. अग्निं ये मिथो वनुषः सपत्ने रातिं दिवः 7, 38, 5. प्र ते वन्वे वनुषो कुर्यते मर्दम् 10, 96, 1. — 2) eifrig im feindlichen Sinne, Angreifer, Nachsteller: ज्ञहि वर्धर्वनुषो मर्त्यस्य RV. 4, 22, 9. 50, 11. 6, 6, 6. सर्वाचीनासो वनुषो युयुञ्जे 6, 23, 3. वनुषामशस्तीः 68, 6. 7, 21, 9. 56, 19. 83, 5. 97, 9. वनुषो ऽभिमातिम् 8, 23, 15. सीदतो वनुषो यथा die (beim Soma) sitzen wie Kampfberete 9, 64, 29. 91, 5.

2. वनुस् (von 1. वनुस्), वनुषते erlangen: दैव्या क्तातो वनुषत् पूर्वे RV. 10, 128, 3. वनिषत् TS. सनिषन् AV.

वनेकिंशुक m. pl. Butea frondosa im Walde, bildlich von Dingen, die zu treffen man nicht erwartete, Schol. zu P. 2, 1, 44. 6, 3, 9.

वनेतुद्रा (वने, loc. von 1. वन, + तु) f. Pongamia glabra Vent. (कर्ञ्ज) RATNAM. im ÇKDB.

वनेचर adj. (f. ई) = वनचर im Walde umherschweifend, — wohnend; m. Waldbewohner (von Menschen und Thieren) MBH. 1, 5579. 3, 15590. 15641. 12, 4636. HARIV. 1141. R. 2, 37, 26. 42, 18. R. GORR. 1, 8, 8. 2, 111, 48. 3, 47, 2. 31, 34. 79, 47. 5, 62, 8. 6, 109, 22 (überall bei GORR. fälschlich वने चर getrennt geschrieben). KUMĀRAS. 1, 10. KĪR. 1, 1. MĀRK. P. 37, 7.

वनेज्ञा adj. hölzern: वसतिर्वनेज्ञाः RV. 6, 3, 3.

वनेज्य m. eine Mango-Art (बद्धरमाल) RĀGĀN. im ÇKDB.

वनेवित्त्वक m. pl. Aegle Marmelos im Walde, bildlich von Dingen, die zu treffen man nicht erwartete, P. 2, 1, 44, Schol.

वनेपु m. N. pr. eines Sohnes des Raudrāçya MBH. 1, 3700. HARIV. 1660. VP. 447. BHĀG. P. 9, 20, 5.

वनेहासु adj. im oder am Holze prangend RV. 6, 12, 3.

वनेषूक्त (वने + सक्त) adj. etwa im Holze schallend: अयं स्यति द्विवर्त-निर्वनेषात् RV. 10, 61, 20.

वनेसज्ञ m. Terminalia tomentosa W. und A. RATNAM. im ÇKDB.

वनेदिश m. Waldgegend, eine Stelle im Walde MBH. 1, 5889. 3, 15572.

R. 2, 56, 9. 3, 19, 18. 50, 12. fg. 4, 26, 7. VARĀH. BRH. S. 48, 5. PAÑĀT. 68, 10. HIT. 121, 10.

वनोद्भव 1) adj. im Walde entstanden, — befindlich: मार्गीः MBH. 3, 2541. — 2) f. या die wilde Baumwollenstaude RATNAM. 171.

वनोपलव n. Waldbrand MEGH. 17.

वनोर्वी (1. वन + उ) f. Waldgegend RĀGĀ-TAR. 2, 137.

वनोक्त = वनोक्तम् Waldbewohner: शैलद्रुमवनोक्तानाम् MBH. 5, 4028. वनोक्ता इव BHĀG. P. 5, 10, 25.

वनोक्तम् (1. वन + क्त) adj. im Walde wohnend; m. Waldbewohner. Anachoret, ein im Walde lebendes Thier (insbes. der Affe AK. 2, 5, 3. H. 1292. HALĀJ. 2, 76) MBH. 1, 1119. 5, 6039. 7110. 7, 4166. 12, 4277. SPR. 3861. HARIV. 4550. 4554. R. 1, 63, 28. 2, 100, 39 (108, 40 GORR.). R. GORR. 3, 49, 39. 60, 13. 4, 1, 16. 17, 50. 6, 26, 5. 27, 19. ÇĀK. 55, 18. RĀGĀ-TAR. 3, 47. 4, 168. BHĀG. P. 4, 9, 21. 5, 19, 7. 7, 2, 7 (80 v. a. Eber). 9, 9, 25. स्थापु Çiva's Wald bewohnend KUMĀRAS. 3, 34.

वनेष m. dichter Wald, N. pr. einer Gegend (eines Berges?) im Westen VARĀH. BRH. S. 14, 20.

वनेषधि f. ein wild wachsendes Kraut Verz. d. Oxf. H. 183, a, 14. 191, b, 22. 192, a, 32. b, No. 437. 193, a, 26.

वनेर (von 1. वन् nom. ag. Inhaber, Besitzer: रूपो वक्तुः RV. 3, 30. 18. 7, 8, 3. — Vgl. वनितर.

वनेव (?) m. N. pr. eines Mannes PRAVARĀDHJ. in Verz. d. B. H. 56, 35. वन्ति f. nom. act. von 1. वन् P. 6, 4, 39, Sch.

वन्द, वन्दते (अभिवादनस्तुत्योः) DHĀTUP. 2, 10. ववन्दे, वन्दिषीमहि, वन्ध्यते, वन्दि (ved.), वन्दित, वन्दितुम्, वन्दिता, वन्ध्य (episch), वन्द्यैः act. (vgl. auch u. अग्निः) ववन्द RV. 6, 51, 12. 66, 3. ववन्दिम 5, 23, 9. अ-वन्दताम् R. 1, 31, 31. 1) loben, rühmen, preisen: ब्रह्मणा RV. 1, 24, 11. नमोभिः 27, 1. 82, 3. वन्दारुस्ते तन्वं वन्दे अग्ने 147, 2. 173, 12. 3, 54, 4. 4, 57, 6. अग्ने वन्दे तव अग्निम् 5, 28, 4. उतानकृस्तो युवपुर्ववन्द 6, 63, 3. नासत्या यो यज्ञं वन्दते च 7, 73, 2. गिरा वन्दस्व मरुतो अहं 8, 20, 20. अयं स्तुतो राज्ञो वन्दि वेधाः 10, 61, 16. 115, 8. AV. 7, 60, 1. वं हि देव वन्दि-तो कृता दस्यैर्बभूविथ 1, 7, 1. ÇĀK. ÇĀ. 4, 18, 7. — 2) Ehre erweisen, ehrfurchtswoll begrüßen, Jmd oder Etwas seine Ehrfurcht bezeugen: कुमारश्चित्पितरं वन्दमानं प्रति नानाम हस्तापयत्तम् RV. 2, 33, 12. (भवन-अष्टमासाद्य) ववन्दे पृथुताप्राप्ती पृथाम् MBH. 1, 7982. 3, 11917. 15795. 5, 7324. 12, 6408. HARIV. 7902. 10997. fg. R. Einl. 1. 4, 31, 31. 2, 32. 2. 55, 19. 110, 20. R. GORR. 4, 32, 24. 71, 20. 3, 2, 5. RAGH. 1, 1. 13, 72. 77. VIKR. 81, 11. SPR. 411. KATHĀS. 24, 162. 43, 240. RĀGĀ-TAR. 2, 111. BHĀG. P. 3, 31, 14. 6, 16, 16. 7, 7, 35. BHĀṬṬ. 19, 27. SARVADARÇANAS. 73, 2. 101, 17. वन्ध्यते पदवन्ध्यो ऽपि तत्प्रभावो धनस्य च Spr. 1811. वन्ध्यमानः सुरोत्तमैः R. 1, 14, 25. वन्दिभिर्वन्दितः काले ब्रह्मिः सूतमागधेः R. GORR. 2, 96, 9. KATHĀS. 33, 171. BHĀG. P. 3, 28, 23. PAÑĀT. 4, 3, 79. शिरसा वन्दनोयं त-मवन्दत् MBH. 13, 2857. R. 7, 44, 11. 46, 18. 48, 20. MĀKĀH. 66, 20. BHĀG. P. 1, 11, 29. 19, 11. 6, 2, 22. ववन्दे च पितरं पादयोः पतन् KATHĀS. 43, 123. ववन्दे चैतमयेत्य पादयोः 32, 411. 43, 155. पादयोश्च शिरसा ववन्दिरे 365. रामस्य ववन्दे चरणौ R. 2, 100, 37. 40, 3 (39, 3 GORR.). 113, 6. MBH. 3, 11907 (st. च वन्ध्य hat ARĀ. 1, 5 ववन्द). HARIV. 14106. BHĀG. P. 4, 11, 6. 10, 6, 37. MĀRK. P. 22, 4. GĪT. 7, 42. ववन्दे चरणौ मूर्धा MBH. 2, 23. R. 2,